

अब हरिगढ़ के नाम से जाना जाएगा अलीगढ़ ! सर्वस मति से पारित हुआ नाम बदलने वाला प्रस्ताव



उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ जिले का नाम बदल कर हरिगढ़ करने की कबज्याद शुरू हो चुकी है। जिले के सभी पार्षदों ने इस बदलाव के लिए अपनी सहमति दे दी है। महागौर के माध्यम से अब यह प्रस्ताव शासन को अंतिम निर्णय के लिए भेजा जाएगा। अलीगढ़ के जनप्रतिनिधियों ने इसे सप्ताहन पर पार की ओर बढ़ाने का प्रयास किया है। यह निर्णय सोमवार (6 नवंबर, 2023) को लिया गया है। अलीगढ़ के महागौर प्रशांत सिंघल ने, हड़ से इस बात की घोषणा की है। उन्होंने बताया कि इस नाम को सोमवार को हड़ मीटिंग में पारित करने का प्रयास किया था। संभव है इसका एक प्रस्ताव भी बैठक में पेश किया। अलीगढ़ को हरिगढ़ करने की मांग वाले इस प्रस्ताव को सभी पार्षदों ने सर्वस मति से स्वीकार भी कर लिया। महागौर के मुत्तिका, अजय इस प्रस्ताव पर शासन के आँगन निर्णय की प्रतीक्षा है। साथ ही उन्होंने सरकारियता से आला जहां कि शासन इस नाम को स्वीकार कर के अलीगढ़ का नाम हरिगढ़ रखेगा।

मंदिर आधारित अर्थव्यवस्था से बढ़ रहा भारत

अथर्व पंवार-

भारत एक ऐसा देश है जहाँ की धरती विभिन्न संस्कृति और गीति रिवाजों से परिचित और पर्वित है तथा इसका मु य मानविंदु है इस देश की जीवनशैली और यहाँ जन्मा धर्म। भारत की प्राचीन एवं उच्च कोटि की परंपरा के सभी घटकों में धर्म के समन्वय एवं उन्मो धर्म के आचरण की एक निरन्तरतया या की गई है। व्यापार और अर्थव्यवस्था में भी धर्म एक मु य मान विंदु रहा है।



उद्धारप्रथायं भारत के धर्म और संस्कृति के प्रचार-प्रसार में धर्मस्थलों की एक विशेष भूमिका रही है। मध्यकाल में अजयन, रूस आदि देशों में बननावा ग् धार्मिक स्थल मु यतः व्यापारियों के द्वारा ही बननावा ग् थे निस्सक कारण यात्राओं का व्यवसाय आर प हुआ एवं उस क्षेत्र में संस्कृति का प्रचार-प्रसार भी हुआ। भारत के व्यापारी वहां भारतीय वस्तुओं के साथ अपनी जीवन शैली भी ले गए थे निस्सक अनुसरण करते हुए उन्होंने वहां मंदिर बनावा ग् जो इतिहास में अंकित होने के बाद भी अपनी जड़ें आज भी भारत में जोड़ते हैं। प्राचीन भारत की संस्कृति का सूक्ष्मता से अध्ययन करने पर भी विदित होता है कि मंदिर मात्र एक तीर्थ स्थल नहीं होते थे बल्कि वह एक सामुदायिक स्थल थे। दक्षिण भारत में आज भी देखा जा सकता है कि कई तालुकाओं के निर्माण में मध्य में मंदिर स्थापित होता था तथा उसके बाद रहवासी जैसे व्यावसायिक क्षेत्र बननावा ग् जाते थे। तमिलनाडु के वृहदेश्वर मंदिर और भोपाल की

कुटिली मस्जिद के स्थान पर उसके पूर्व बननावा ग् ग् मंदिर के शिलालेखों में इसका प्राणिक उल्लेख मिलता है। मंदिर परिसर में शिक्षा, स्वास्थ सेवाएं, भोजन, छात्रवृत्त, विश्राम के साथ-साथ धन को जमा करने एवं लोन सुविधाएँ भी उपलब्ध कराई जाती थीं, मंदिर एक प्रकार का बैंक होते थे। निस्सक कारण मंदिर एक तीर्थ स्थल के साथ-साथ लोक-कल्याण के केंद्र भी होते थे तथा एक विशिष्ट क्षेत्र की अर्थव्यवस्था के केंद्र भी होते थे। आज यम भारत भी इस मंदिर के माध्यम से निर्मित अर्थव्यवस्था को साक्ष्यी एवं विश्रामार्थ स्तर तक ले जा रहा है। जहाँ मंदिर होते हैं हस्सक के शोध में बताया गया है कि भारत में मंदिरों या तीर्थस्थलों में दर्शन की प्रथाएं को या ब्रह्मजनों

से होता था। हर मंदिर में अकरफक शिल्पकला, भव्यता, अलंकारिक किशोरे के साथ-साथ अर्थव्यवस्था के साथ-साथ पर्यटन स्थल भी थे। यह व्यवस्था स पूर्ण भारत में थी। मंदिरों के माध्यम से अर्थव्यवस्था का उद्यम करने की नीति ही 'रेपल इकॉनमी' कहलाती है। आज जो 'रेपल इकॉनमी' में भी वृद्धि हो रही है, नेफाल सैलर सर्व ऑफिस (हस्सक) के अनुसरण के अनुसार आर शोध स्तर पर यह रेपल इकॉनमी भारत की अर्थव्यवस्था में 3.02 लाख करोड़ का योगदान दे रही है वहीं भारत की जीडीपी में 2.32 प्रतिशत भागीदारी करती है। हस्सक के शोध में बताया गया है कि भारत में मंदिरों या तीर्थस्थलों में दर्शन की प्रथाओं को या ब्रह्मजनों

में 87 प्रतिशत भारतीय है तथा 13 प्रतिशत विदेशी या विदेश में रह रहे भारतीय हैं। प्रतिवर्ष धार्मिक यात्राओं का 4.74 लाख करोड़ का व्यापार होता है। वर्ष 2022-23 में केंद्र सरकार को 19,34,706 करोड़ का राजस्व मंदिरों से प्राप्त हुआ था। 20 लाख से भी अधिक मंदिरों वाले भारत देश में 8 करोड़ लोग पर्यटन और यात्रा के उद्देश्य से जुड़े हुए हैं। निस्सक कारण आज इस रेपल इकॉनमी को सशक्त करने के लिए मानवीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी को सरकार भी योजनाबद्ध रूप में कार्य कर रही है। अयोध्या स्थित श्रीराम मंदिर, महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग के लिए महकाल लोक, कारी विश्वेश्वर के लिए कारी कोरिडोर, केदारनाथ में मंदिर जीर्णोद्धार एवं शंकराचार्य स्थल,

मंदिर आध्यात्मिक उर्जा के केंद्र हैं लेकिन उन्हें पर्यटन केंद्र के रूप में भी मानकर हम अर्थव्यवस्था का सुधार तो करते ही हैं, साथ ही उस तीर्थस्थल से जुड़ने वाले व्यक्ति को आर्थिक रूप से लाभ हो रहा है तथा इन क्षेत्रों में व्यापार और रोजगार की संभावनाएँ भी बढ़ चुकी हैं। मंदिरों को मात्र आस्था का केंद्र ही माना जाता था लेकिन यह करोड़ों लोगों के जीवनमान का कारण बन गए हैं। मंदिरों से पुरु, बाल, वरुण, सुगंध सामग्री आदि जैसे पुरु उद्योगों का उद्यम होता है, साथ ही यात्रा(ट्रांसपोर्ट और ट्रेवल), विश्रामगृह (होटल), चिकित्सा आदि क्षेत्र में भी प्रतिष्ठित हैं। जहाँ मंदिर होते हैं उसके आसपास के क्षेत्र में जीवनी का मूल्य भी बढ़ता है निस्सक कारण भूमि का व्यवसाय भी स्वर्णिम बनता है। मंदिरों के माध्यम से कला, संस्कृति एवं शिक्षा के संरक्षण एवं संवर्धन के माँग भी उठते हैं जो स्वस्थ एवं उज्ज्वल व्यवसाय है। आज इस रेपल इकॉनमी से सम्पन्न विश्व अतहत हो चुका है एवं वैश्विक स्तर पर हो रहे मंदिर निर्माण इकॉनमी का साक्ष्य उद्धारण है। जहाँ इंडोनेशिया, थाईलैंड, लाओस आदि देश धार्मिक संस्कृति के शोचन भाव मंदिरों को पर्यटन स्थलों के रूप में स्थापित करने के अपनी अर्थव्यवस्था में आर्थिक साक्ष्य उद्धारण है। जहाँ इंडोनेशिया, थाईलैंड, लाओस आदि देश धार्मिक संस्कृति के शोचन भाव मंदिरों को पर्यटन स्थलों के रूप में स्थापित करने के अपनी अर्थव्यवस्था में आर्थिक साक्ष्य उद्धारण कर के मंदिर निर्माण कर चुके हैं तथा अन्य देश भी इसी पंक्ति में अजात बड़ रहे हैं।

पीएम मोदी ने सतना की चुनावी सभा में कहा- मतदान से पहले कांग्रेस के झूठ का गुब्बारा फूट गया

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गुरुवार को सतना की चुनावी सभा में कहा कि मतदान से पहले ही कांग्रेस के झूठ का गुब्बारा फूट गया है। उसके पास मध्यप्रदेश के विकास का कोई रणनीति नहीं है। कांग्रेस के धक-धरे चेहरों में रूख के गुवाओं को कोई भविष्य नहीं दिखता। इमॉलियर रूखको मोदी की गारंटी पर परेशान है। रूखने बाद कट्टे हुए हक, ५%अयोग्यता में जिस भक्ति से इस पदु श्रीराम का धय मंदिर बना रहे हैं, उसी भक्ति से गर्भियों के घर भी बनना है। जिन्हें अभी भी पर (रूख आसरा) नहीं मिला है, उन्हें मोदी की गारंटी है कि उनका घर भी बनना। 3 दिस्सक को सरकार वापसी पर रूखआसरा का काम तेजी से शुरू किया जा रहा है। जिन्होंने 4 करोड़ पर बनाए, लेकिन खुद के लिए पर नहीं बनाया। उन्होंने अपने में आजकल जहां भी जाता हू, वहां अयोग्यता में बन रहे पुरु गम के मंदिर की चर्च चलती है। पूरे देश में खुशी की लहर है। सौभाग्य से भरै इस पावन कालखंड में मेरे मन में एक बात बार-बार आती है। यह बात मुझे अंडोलित करती रहती है और मुझे तेज पति से दूरनी की प्रेरणा देती रहती है। यह बात है



गम काज-कौर्त् विन्गु, मोहिं कहां विश्राम नहीं अवर रुकना नहीं है, धकना नहीं है। **आगे जोर है त्रिशक्ति, यानी तीरकमाल** पीएम मोदी ने कहा कि रूखके चुनाव में आपका हर वोट शक्ति की तबत से भर हुआ है। आपका एक वोट यहां फिर से भावना की सरकार बनने का राह है। आपका वोट दिखें में मोदी के मन्दाव करेगा। आपका यही वोट प्रगच्छी कांग्रेस को रूख की सरकार से सौ करोड़ खोखेगा। यानी एक वोट, तीन कमाल **कांग्रेस ने 10 करोड़ फर्जी लाभाभी बनाए** कांग्रेस पर निशाना साधते हुए पीएम

राशन मिलना बंद हो जाएगा। मु त में इलाज मिलना बंद हो जाएगा। लाइली बढना योजना बंद हो जाएगी। वही, उन्होंने कहा कि ये सतना की ही ताकत और सामर्थ्य है कि बंदूक की नली से समीत के सूर निकलते हैं। विश्व में जहां चारों तरफ बम-बंदूक की आवाजें सुनाई दे रही हैं, भारत जैसे देश आज दुनिया में अपने विचार का प्रथम पैदा करने का प्रयास कर रहे हैं। उभय की मानसिकता वाले मानव समुदाय को सतना की इस धरती का ये बहुत ही सशक्त संदेश है। **विश्व की 30 विधानसभा सीटों को किसकवर** PM की सतना की सभा ने विश्व की 30 विधानसभा सीटों को कवर किया। सतना की 7 तो देवा जिले की 8 सीटों पर इसका सीधा प्रभाव पड़ा। उत्तरप्रदेश की सभा से उत्तरप्रदेश की 6, पना की 3, टीरकमाल की 3, निमाडी की 2 और कोरकवर करेगे। यह सभा बुंदेलखंड की 26 सीटों पर असर खलेगी। नीमच की 2 सभा में नीमच की 3, मरौरी की 4 सीटों को कवर करेगा। निमाड के दूसरे जिलों में भी इस सभा का असर होगा।

हिंदुओं को न मिले ज्ञानवापी, इसलिए 50-60 हजार की मुस्लिम भीड़ ने रोका था रास्ता, वकील की आपबीती

मई 2022 के दौरान जब वह और उनके पिता हरिश्चंकर जैन वाणरासी के विवादित ज्ञानवापी ढाँचे के सर्वे के लिए जा रहे थे तब उनकी गाड़ी को केस मुस्लिम भीड़ ने रोक लिया था। यह भीड़ इन दोनों को ज्ञानवापी ढाँचे तक नहीं पहुँचने देना चाहती थी। यह बात वकील विष्णु शंकर जैन ने ज्ञानवापी परिसर को लेकर कहा।



जो किन के इस मुद्दे अंतुषण को विचार संत की आगामी किताब में भी जगह दी जाएगी। यह किताब काशी पर ही लिखी गई है। इसी किताब के लिए किए गए एक इंटरव्यू का एक खेप हिस्सा से स (पहले दिख रहे) पर अंतर रंजनाथ ने डाला है। विष्णु शंकर और उनके पिता हरिश्चंकर जैन, दोनों ही इस ज्ञानवापी के विवादित ढाँचे के मामले में हिन्दी पक्ष की तरफ से लड़ रहे हैं। उनको बौद्ध बंधु ज्ञानवापी ढाँचे तक पहुँचने से रोकने के लिए अनुसूचित जाति मजदूरों ने यह भीड़ इकट्ठी की। ज्ञानवापी ढाँचे का यह सर्वे व्याकरण के अंदरूज पर ही हो रहा था। विष्णु शंकर जैन ने बताया कि वीडियोग्राफी सर्वे वाले दिन की गईं उनके हृदय में अभी भी ताज है।

उन्होंने बताया, यह 5 या 6 मई 2022 का दिन था जब ज्ञानवापी ढाँचे के अनुसूचित जाति मजदूर कमेटी के संकेतों ने कहा था कि वह ढाँचे के भीतर का वीडियोग्राफी सर्वे नहीं होने देंगे। उनके ही कहने पर 50 से 60 हजार मुस्लिमों ने मैदान पर से लेकर काशी विश्वनाथ मंदिर के गेट नंबर 4 का रास्ता जाम कर दिया था।

जबलपुर में दो सड़क हादसों में तीन की मौत, दो गंभीर

जबलपुर। गोरखपुर और महागवां में सड़क हादसों में तीन की मौत हुई। इन स्थिति में अजना पिता की तरफ असहाय होकर देखा। उन्होंने मुझे धीरे धीरे साथ बताया कि हम आज महागवां के पास जरूर पहुँचेंगे चाले जीवित या फिर मृत।

विष्णु शंकर ने कहा कि इस घटना के कुछ ही दिनों के बाद ढाँचे के अंदर स्थित बुडखानों से ना केवल शिल्पकारों का बलिष्क स्थापित, नंदी बेल और अंतरा में कई हिन्दू चिन्ह विवाहित ढाँचे की दीवारों पर मिले। गौरतलब है कि मई 2022 को न्यायलय को आदेश देकर ढाँचे की वीडियोग्राफी रकजानी पड़ी थी। 'बौद्ध यहाँ पर इस्लाम भीड़ सर्वे वाली थीं को ढाँचे के अंदर सर्वे नहीं करने दे रही थी। मैंने से बाहर सर्वे पूरा कर लिया था लेकिन उन्हें भीड़ अंदर नहीं घुसने देना चाहती थी। इस मामले में हाल ही में दलाहादब हाइकोर्ट ने भारत निर्देश पुरातन सर्वेक्षण को ढाँचे के अंदर सर्वे करने की अनुमति दी है। उसे अनुसूचित जाति मजदूरों की इस सर्वे को रोकने वाली याचिका को खारिज सर्वे वाले दिन की गईं उनके हृदय

में अभी भी ताज है। मैंने 2022 का दिन था जब ज्ञानवापी ढाँचे के अनुसूचित जाति मजदूर कमेटी के संकेतों ने कहा था कि वह ढाँचे के भीतर का वीडियोग्राफी सर्वे नहीं होने देंगे। उनके ही कहने पर 50 से 60 हजार मुस्लिमों ने मैदान पर से लेकर काशी विश्वनाथ मंदिर के गेट नंबर 4 का रास्ता जाम कर दिया था।

मौसम के कारण भोपाल के बच्चों में निमोनिया का खतरा, स्वास्थ्य विभाग की तैयारी शुरू

प्रदेश की राजधानी भोपाल में मौसम के असामान्य परिवर्तन के कारण बच्चों में निमोनिया का खतरा पैदा हो गया है। स्थिति के गंभीर होने से पहले ही स्वास्थ्य विभाग ने तैयारी शुरू कर दी है। यहाँ क्वाना जरूरी है कि निमोनिया विभागे के कार्य मूल्य से 5 वर्ष तक के बच्चों की पुरु हो जाती है। **सर्वे के मौसम में बच्चों में निमोनिया के केस आगमन पराजति है** भोपाल कचे टर ऑफिस से मिली जानकारी के अनुसार, जिला चिकित्सालय जबलपुर में वरिष्ठ रिजु गंग विरोषेण डॉ.मिस्त से सेना एच.डी. धिरका जैन ने शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की एएनएल को निमोनिया के संकेतों में विचार से जानकारी दी, तबकि पीडित बच्चों को तत्काल प्राथमिक इलाज दिया जा के। बच्चों में निमोनिया के लक्षणों की पहचान एवं उसके उपचार एवं प्रबंधन के लिए स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं का प्रशिक्षण आयोजित किया गया, जिन्होंने निमोनिया के आकलन, निमोनिया का रणिकरण, खतलनक लक्षणों के चिन्हों की पहचान, समुदाय आधारित निमोनिया का प्रबंधन, उपचार एवं रेफरल के संकेतों में जानकारी दी गई। मु य चिकित्सा स्वास्थ्य अधिकारी भोपाल डॉ.प्रभाकर तिसारी ने बताया कि सर्वे के दौरान बच्चों में निमोनिया के केस आगमन पराजति है। इसे देखते हुए मैदानी स्वास्थ्य कार्यकर्ता को प्रशिक्षित किया गया है निस्सक कि यह अपने क्षेत्र में निमोनिया के लक्षण वाले बच्चों की शीघ्र पहचान कर शीघ्र प्रबंधन कर सकें। निमोनिया से बचाव एवं जागरूकता हेतु विभाग ग्राह 12 नवंबर से 29 नवंबर तक सास अभियान संचालित किया जा रहा है।

यशस्वी व्यक्तित्व के धनी उत्तमचंद इसराणी

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का काम ऐसे समर्पित लोगों के बल पर खड़ा है, जिन्होंने गुरुत्व होते हुए भी अपने जीवन में संच कार्य को सदा प्राथमिकता दी है। ऐसे ही एक यशस्वी अधिकांश थे श्री उत्तमचंद इसराणी। श्री इसराणी का जन्म 10 नवंबर, 1923 को सिन्धु प्रान्त में से रार जिले की लाडकाणा तहसील में स्थित गाँव 'मिर्जा जो गोठ' (वर्तमान पाकिस्तान) में हुआ था। बाल्यन में ही ये संघ के स्वयंसेवक बन गये थे। उन दिनों सिन्धु में मुस्लिम गणितविधियों जोगे पर थीं। चिकित्सा विज्ञान के नरे लामो हूँ मसहली गुंठे रात में हिन्दू बलिष्ठों में घुसते थे, ऐसे में हिन्दू समाज का विश्वास केवल संघ पर ही था। शाखा पर सैनिकी स्वयंसेवक आते थे, शास्त्र ही कोई हिन्दू युद्ध ऐसा ही, जो उन



दिनों शाखा न गया हो, पर इसके बाद भी देश का विभाजन हो गया। कांग्रेसी नेताओं की सलाह लिखना से शुरू कर दिया। अखिल भारतीय कांग्रेस के केंद्रकेंद्र हिन्दुओं की अपना घर, खेत, कारोबार और वर मिट्टी छोड़ने

चलाने के लिये वकालत पर प कर दी। इसी के साथ ये सर्व कार्य में भी सक्रिय रहे। बहुत जल्द जैक सिन्धी कालोनी जिला उनका प्रभान ही संच प्राथमिक कार्यव्यवस्था बना रहा। इस प्रकार उत्तमचंद जी और भोपाल का सर्व कार्य परसर एकलव्य हो गये। इसराणी जी को पूर्ण विश्वास था कि ईश्वर की सहायता और यह स्थिति बदलेगी, चूँकि संघ ने कभी कोई प्रतिक्रिया कार्यवाही नहीं की। 1977 में आधाकाल की समाप्ति और प्रतिक्रिया समिति के बाद ये फिर सर्व कार्य में सक्रिय हो गये, जब उनका स्वास्थ्य खराब होने लगा, तो उन्होंने वरिष्ठ अधिकारियों से आग्रह कर दणित से मुक्ति ले ली। इसके बाद भी 'अखिल भारतीय अधिकांश परिसर' के राष्ट्रीय अध्यक्ष के नाते जो स भव हुआ, काम करते रहे।

प्र पजवूर कर दिया, जिसमें ये खेत कर बड़े हुए थे, लायों हिन्दुओं को अपनी प्रगाणुति भी देनी पड़ी। श्री इसराणी अपने परिवार सहित मध्य प्रदेश के भोपाल में आकर बस गये, भोपाल में उन्होंने अपना परिवार

कठिन समय था, वकालत बन्द होने से घर की आय रुक गयी, फिर भी एक स्थिरचरुत सन्त की भाँति उन्होंने धैर्य रखा और सन्त में बन्द सभी साधियों की भी साहसपूर्वक रूप परिचितिया का सामना करने का स बल प्रदान किया। इसराणी जी को पूर्ण विश्वास था कि ईश्वर की सहायता और यह स्थिति बदलेगी, चूँकि संघ ने कभी कोई प्रतिक्रिया कार्यवाही नहीं की। 1977 में आधाकाल की समाप्ति और प्रतिक्रिया समिति के बाद ये फिर सर्व कार्य में सक्रिय हो गये, जब उनका स्वास्थ्य खराब होने लगा, तो उन्होंने वरिष्ठ अधिकारियों से आग्रह कर दणित से मुक्ति ले ली। इसके बाद भी 'अखिल भारतीय अधिकांश परिसर' के राष्ट्रीय अध्यक्ष के नाते जो स भव हुआ, काम करते रहे।

एक बार जबलपुर प्रवास में उन्हें भोपाल हटवाकर हुआ। उसके बाद उन्हें भोपाल लाकर अस्पताल में भर्ती कराया गया, पर इसके बाद उनकी स्थिति में सुधार नहीं हो सका और 5 दिवस पर, 2007 को उनका अन्तर्गत हुआ। माननीय सुदर्शन जी ने उन्हें श्रद्धांजलि देते हुए कहा, "उत्तमचंद जी ने राष्ट्र के हित में सर्वोपरि यशस्वी जीवन कैसे बितया जा सकता है, आधाकाल की समाप्ति और प्रतिक्रिया समिति के बाद ये फिर सर्व कार्य में सक्रिय हो गये, जब उनका स्वास्थ्य खराब होने लगा, तो उन्होंने वरिष्ठ अधिकारियों से आग्रह कर दणित से मुक्ति ले ली। इसके बाद भी 'अखिल भारतीय अधिकांश परिसर' के राष्ट्रीय अध्यक्ष के नाते जो स भव हुआ, काम करते रहे।

